विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 4 ■ नवम्बर 2025

विद्या की रोशनी से जीवंत होती स्मृति शिलाएँ

वालवी (गडचिरोली): गडचिरोली के इस आदिवासी क्षेत्र में लोग अपने घर के पिछवाड़े में ही अपने प्रियजनों को दफनाते हैं और उनकी याद में वहाँ पर एक चौकोनी पत्थर लगा देते हैं। इसी क्षेत्र के वालवी गाँव के ज़िला परिषद स्कूल में शिक्षक बनकर आए श्रीकांत गटैय्या काटेलवार ने इन मृतकों की समाधि शिलाओं को विद्या की रोशनी से जीवंत कर दिया। यह कहानी उन्हीं की है।

जब वे वर्ष 2019 में यहाँ आए, तब स्कूल में केवल एक ही बच्चा था। स्कूल के नाम पर एक पुराना, जर्जर कमरा था। जब उन्हें पता चला कि बच्चे इसलिए स्कूल नहीं आते क्योंकि उन्हें पाठ्यपुस्तकों की मराठी भाषा समझ में नहीं आती, तो उन्होंने बच्चों की माडिया भाषा सीखना शुरू किया।

श्रीकांत जी ने बच्चों से दोस्ती की और उन्हीं की मदद से एक-एक शब्द सीखने लगे। स्कूल की हालत इतनी खराब थी कि वहाँ पढ़ाई-लिखाई तो क्या, बैठना भी मुश्किल था। फिर उन्होंने गाँव के ताड़ के पेड़ों के तनों पर और पत्तों पर मराठी शब्द और उनके माडिया अर्थ लिखना शुरू किया। बच्चे धीरे-धीरे इसमें रुचि लेने लगे। फिर उन्होंने वाक्य लिखने शुरू किए, और बच्चे सीखने लगे।

जब श्रीकांत जी को गाँव के हर घर में बने इन समाधि शिलाओं के बारे में पता चला तो वह उन शिलाओं का भी उपयोग बच्चों को छोटे छोटे पाठ पढ़ाने के लिए करने लगे। एक अभिभावक बताते हैं, "टूटा-फूटा स्कूल मिला था, और पढ़ाई नहीं हो रही थी। श्रीकांत जी ने तो पूरे गाँव को ही विद्यालय बना दिया।"

श्रीकांत जी बताते हैं कि गाँववालों ने उनके साथ मिलकर एक गोटुल बनाया, जो उनके समाज में एक धार्मिक स्थल होता है। "हमने धर्मस्थल को ही पाठशाला के रूप में इस्तेमाल किया। इसका मतलब था कि अब गाँववालों को शिक्षा पर विश्वास होने लगा। फिर मैंने भी पूरी ताकत लगा दी। मेरे कहने पर स्कूल के बाद भी बच्चे पढ़ने बैठ जाते थे और हम सब मिलकर रात 11 बजे तक स्वाध्याय करते।"

श्रीकांत जी ने अपनी लगन और समर्पण से पूरे गाँव का माहौल बदल दिया। उनके और गाँववालों के संयुक्त प्रयासों से अब स्कूल की नई इमारत बन चुकी है। अब पढ़ाई पूरे जोश के साथ चल रही है। जहाँ पहले केवल एक बच्चा स्कूल में था, वहाँ अब 23 बच्चे पढ़ रहे हैं। उनके अनोखे अध्यापन के तरीकों से धीरे-धीरे यह स्कूल चर्चा में आने लगा। उनकी पहल पूरे महाराष्ट्र में प्रेरणा का विषय बन गई। वर्ष 2022-23 में महाराष्ट्र सरकार ने इस स्कूल पर एक वीडियो डॉक्युमेंट्री भी बनाई। इतना ही नहीं, दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय नेतृत्व विकास परिषद के लिए महाराष्ट्र की जिन दो स्कूलों का चयन हुआ, उनमें से एक वालवी स्कूल भी था। श्रीकांत जी को कई राज्यस्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जैसे-जैसे स्कूल की पहचान बढ़ी, मदद के हाथ भी आगे बढ़ते गए।

आज श्रीकांत जी सर स्वयं मानते हैं कि विनोबा ऐप जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने उनकी इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस ऐप के ज़रिए उन्हें अन्य शिक्षकों के अनोखे प्रयासों से सीखने और नए विचार अपनाने का अवसर मिला। उनका मानना है कि आजके समय में शिक्षकों को एक दूसरे से जुड़ना चाहिए, और हर चीज़ का अपडेट रखना चाहिए।

अब विनोबा ऐप के AI आधारित समाधान की मदद से शिक्षक अपने विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता के अनुरूप वर्कशीट्स और गतिविधियाँ तुरंत तैयार कर सकेंगे। शिक्षक अपनी आवश्यकता स्थानीय भाषा में, एक प्राकृतिक भाषा इंटरफ़ेस के माध्यम से बता सकेंगे, जिससे यह तकनीक दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए भी सहज और उपयोगी बन जाएगी। ■

"सही अध्यापन से हर विषय आसान हो सकता है।

"पढिए, टीम विनोबा से हुई बातचीत में रायपुर जिला शिक्षाधिकारी श्री हिमांशु भारतीय क्या कहते हैं...

पेज 2

हमारे सरकारी शिक्षक लगातार रोचक परिणाम ला रहे हैं। पढिए साधारण सी दिखनेवाली उनकी युक्तियाँ कैसा उल्लेखनीय बदलाव ला रही हैं।

विनोबा विशेष

पेज 4-5

'सही अध्यापन से हर विषय आसान हो सकता है'

रायपुर: "जब पहली बार हमें महसूस हुआ कि बच्चों का उज्जवल सपना सिर्फ नंबरों में कहीं खो रहा है - वहीं से हमारी जंग शुरू हो गई।"

यह सोच रायपुर जिला शिक्षाधिकारी श्री हिमांशु भारतीय की है, जिन्होंने शिक्षा की इस चुनौती को अपनी पहली प्राथमिकता बना लिया है। टीम विनोबा के साथ हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि शिक्षा के आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं, बल्कि बच्चों के भविष्य की असली तस्वीर हैं। इसी दृष्टिकोण के साथ उन्होंने रायपुर जिले में शिक्षा की स्थिति को गहराई से परखा है।

आपने रायपुर की शिक्षा रैंकिंग में गिरावट को लेकर चिंता जताई है। क्या आप इसे आंकड़ों और उदाहरणों से समझा सकते हैं?

जी हाँ, हमारे जिले का कक्षा 10 का परिणाम राज्य में 32वें स्थान पर है। इस साल परिणाम 66.24% रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 5% कम है। वहीं कक्षा 12 का परिणाम, जो पहले 83.19% था, इस बार 7.69% की गिरावट के साथ करीब 79.5% पर पहुंच गया। यह कमी निश्चित रूप से चिंता का विषय है। इस गिरावट ने हमें यह सोचने पर मजबूर किया कि सुधार की जरूरत कहाँ है और हम बच्चों के भविष्य को कैसे मजबूत बना सकते हैं।

इसे सुधारने के लिए कौनसे कदम उठाए हैं?

हमने 'मिशन उत्कर्ष' के रूप में एक व्यापक प्रयास शुरू किया है। जुलाई माह से ही रणनीति तैयार कर ली गई थी और मंथली टेस्ट लिए जा रहे हैं। इन परीक्षाओं का मूल्यांकन ठीक वैसे ही कराया जाता है जैसे वार्षिक परीक्षा का होता है। निष्पक्षता बनाए रखने के लिए एक स्कूल के प्रश्न पत्रों की जाँच दूसरे स्कूलों के शिक्षक करते हैं — ठीक बोर्ड परीक्षा की तरह। इससे हमें यह पता चल रहा है कि किन शिक्षकों या विद्यालयों के कारण परिणाम कमजोर हैं, ताकि उन्हें प्रशिक्षण और सहायता दी जा सके।

कमजोर परिणामों के पीछे कौनसी प्रमुख चुनौतियाँ रहीं?

पिछले वर्ष युक्तिकरण की प्रक्रिया के कारण कई शिक्षकों का स्थानांतरण हुआ। इससे विद्यालयों की व्यवस्था में काफी बदलाव आया। दूसरा कारण यह भी रहा कि शिक्षा की गुणवत्ता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा सका। इसके अलावा कुछ स्कूलों में शिक्षा गुणवत्ता, संसाधनों की कमी और स्थानीय परिस्थितियाँ भी बाधक बनीं।

श्री हिमांशु भारतीय
रायपुर जिला शिक्षा अधिकारी

इन सारी योजनाओं से क्या परिणाम अपेक्षित हैं?

हम आशा करते हैं कि अगले वर्ष तक कक्षा 12 का परिणाम 85 प्रतिशतऔर कक्षा 10 का परिणाम 95 प्रतिशत तक पहुँचेगा। साथ ही, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के प्रदर्शन में समानता आएगी। इससे बच्चों के सपनों को नई उड़ान मिलेगी।

आगे की दिशा में आपकी क्या योजनाएँ हैं?

जैसे-जैसे कक्षा 10, 12 और अन्य कक्षाओं के परिणाम बेहतर होंगे, हम आगे की दृष्टि से व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष ज़ोर देना चाहते हैं। हमारा उद्देश्य है कि कक्षा 11-12 में छह विषयों में से एक विषय व्यावसायिक शिक्षा का हो, ताकि बच्चे चाहें तो 12 वीं के बाद ही आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। इसके लिए हम बच्चों की काउंसलिंग 9 वीं कक्षा से ही शुरू करेंगे, ताकि वे अपनी रुचि का क्षेत्र चुन सकें और उसी अनुसार 11 वीं-12 वीं में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

हम चाहते हैं कि रायपुर शिक्षा का हब बने — जहाँ केवल पढ़ाई-लिखाई ही नहीं, बल्कि रिसर्च, नवाचार और आत्मनिर्भरता की भी समझ विकसित हो।

इनसे निपटने के लिए आपने क्या रणनीतियाँ अपनाईं?

युक्तिकरण के बाद जहाँ शिक्षकों की कमी थी, वहाँ कलेक्टर साहब के मार्गदर्शन में हमने अंशकालिक स्थानीय शिक्षकों की व्यवस्था की। अध्यापन की गुणवत्ता के साथ ही कमजोर बच्चों की पहचान करके हम उन पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। जो बच्चे कमजोर हैं, उनको कम से कम पासिंग प्रतिशत तक तैयार करने का प्रयास हो रहा है। दूसरी ओर, मेधावी और अच्छे गुण लाने की क्षमता रखनेवाले बच्चों को अतिरिक्त मार्गदर्शन देकर मेरिट तक पहुँचाने पर भी काम हो रहा है।

यह सब लागू करते समय क्या कठिनाइयाँ सामने आईं?

जिला स्तर पर शिक्षकों का काम मॉनिटर करना, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण होता है। इसीलिए हमने मंथली टेस्ट के आधार पर स्कूल प्रधान अध्यापकों की एक बैठक आयोजित की, जिसमें कलेक्टर साहब और सीईओ साहब ने भाग लिया और चार घंटे तक चर्चा की। इससे सोचने के तरीके में बड़ा बदलाव लाया है। अब प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटीज़ (PLC) के माध्यम से शिक्षकों के लिए सामुदायिक सहयोग बनाया जा रहा है। जैसे, युवा स्नातकों को स्कूलों में पढ़ाने का अवसर देकर शिक्षकों का कार्यभार कम किया जा रहा है।

इसके अलावा, शिक्षक लगातार सीख सकें इसलिए मॉडल टीचिंग मेथड्स के 4000 घंटे का कंटेंट ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है। क्यूंकी सही तरीके से पढ़ाया जाए तो हर विषय आसान बनाया जा सकता है। इन सभी प्रक्रियाओं की निगरानी के लिए लगातार डेटा की आवश्यकता होती है, जिसमें विनोबा ऐप का बहुत बड़ा सहयोग मिल रहा है। ■

नागपूर: जिले में 3 उत्कृष्ट क्लस्टर प्रमुख, 3 स्पोकन इंग्लिश वार्षिक विजेता, 3 स्पेलिंग बी विजेता और 5 POM शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण उप-शिक्षाधिकारी श्री रमेश हरडे, विस्तार अधिकारी श्री भास्कर झोडे और वैज्ञानिक (IRIS) डॉ. हेमंत पांडे के हाथों हुआ।

चंद्रपुर: जिले के 10 शिक्षकों को POM, 1 को मॉर्निंग असेंबली क्लब के लिए और 5 को लाइब्रेरी बैग से सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण शिक्षाधिकारी श्रीमती अश्विनी केलकर सोनावणे, उप-शिक्षाधिकारी श्री विशाल देशमुख और विस्तार अधिकारी श्री देवानंद रामगीरकर के हाथों हुआ।

बुलढाणा: जिला परिषद CEO श्री गुलाबराव खरात और उप-शिक्षाधिकारी श्री उमेश जैन ने यहाँ आयोजित एक जिला स्तरीय समारोह में 5 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मंथ', 2 को क्लब विजेता और 6 उत्कृष्ट क्लस्टर प्रमुखों को सम्मानित किया।

वाशिम: शिक्षाधिकारी श्री संजय ससाणे और BEO श्री श्रीकांत माने ने 4 जिला स्तरीय विजेता, 2 ब्लॉक स्तरीय विजेता और 2 उत्कृष्ट क्लस्टर प्रमुखों का सम्मान किया। कार्यक्रम में लगभग 250 शिक्षक और क्लस्टर प्रमुख, साथ ही टीम विनोबा के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

नंदुरबार: Open Links Foundation (OLF) ने 14 अक्टूबर को, नंदुरबार जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO), श्री नमन गोयल (IAS) के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर OLF की ओर से डिविजन मैनेजर श्रीकांत सावंत और प्रोग्राम मैनेजर विशाल डहाट मौजूद रहे।

सुकमा: यहाँ आयोजित एक जिला स्तरीय कार्यक्रम में सहायक विकासखंड अधिकारी (ABEO) चंद्रशेखर सोरी द्वारा एक शिक्षक को 'पोस्ट ऑफ द मंथ' और 10 संकुल समन्वयकों (CACs) को सम्मानित किया। कई शिक्षक और शिक्षा विभाग के अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

दंतेवाड़ा: जिला शिक्षाधिकारी (DEO) श्री प्रमोद ठाकुर और BEO श्री संतोष गुप्ता द्वारा जिला कार्यालय में आयोजित समारोह में 3 शिक्षकों को जिला स्तरीय और 4 शिक्षकों को ब्लॉक स्तरीय 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

रायगढ़: जिला शिक्षाधिकारी (DEO) श्री के.वी. राव, DMC श्री आलोक स्वर्णकार, और APC श्री भुवनेश्वर पटेलव APC श्रीमती किरण मिश्राने जिला कार्यालय में आयोजित समारोह में 6 शिक्षकोंको जिला स्तरीय 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कारों से सम्मानित किया।

कूट प्रश्न 15 का उत्तर **हाँ! क्योंकि सभी लेबल गलत लगे हैं, इसलिए "मिश्रित" थैला वास्तव में केवल सेबवाला है। इसी जानकारी का उपयोग करके बाकी थैलों को सही लेबल करें।**

मिट्टी के रंग

मोहगांव (नासिक): "पहले मैं चुप रहती थी... मुझे लगता था कि मैं दूसरों जितनी तेज़ नहीं हूँ। अब मुझे लगता है कि मैं कुछ बना सकती हूँ, कुछ बोल सकती हूँ। जब मेरी वीडियो विनोबा ऐप पर आई, तो बहुत अच्छा लगा।"

यह कहते हुए एक छात्रा की आँखों में जो चमक थी, वही चमक आज मोहगांव की ज़िला परिषद स्कूल के हर बच्चे में दिखती है। यह छात्रा कभी संकोची और चुप रहने वाली बच्ची थी। जब स्कूल में 'मेरी माटी मेरा देश' नाम की गतिविधि हुई, तो उसने मिट्टी से एक छोटा-सा स्कूल और कक्षा बनाकर सबको चौंका दिया। उसकी यह रचना जब शिक्षक अमोल गजभार ने विनोबा ऐप पर साझा की, तो उसका आत्मविश्वास मानो पंख लगाकर उड़ चला।

अमोल जी कहते हैं, "जब बच्चे रंगों और शब्दों से खेलते हैं, तब वे पढ़ाई से डरते नहीं — उसे जीने लगते हैं।" यही विश्वास उनके काम का आधार बना। 2018 में जब उन्होंने मोहगांव स्कूल की जिम्मेदारी संभाली, तब वहाँ केवल 22 बच्चे थे। अमोल जी का लक्ष्य केवल संख्या बढ़ाना यह लक्ष्य तो था, साथ ही अमोल जी ऐसा माहौल बनाना चाहते थे, जहाँ हर बच्चा सीखने के साथ सृजन करे, जहाँ स्कूल बच्चों के लिए रोचक, रंगीन और प्रेरक बने।

उन्होंने शुरुआत की बच्चों की कलात्मक और व्यावहारिक प्रतिभाओं को पहचानने से। स्कूल में चित्रकला, हस्तकला, मिट्टी से वस्तुएँ बनाना, गायन, नृत्य और कहानी-कहने जैसी गतिविधियाँ शुरू हुईं। स्थानीय सामग्री से खिलौने और सजावटी वस्तुएँ बनाते-बनाते बच्चों में आत्मविश्वास और कल्पनाशक्ति का विकास होने लगा। धीरे-धीरे यह प्रयोग सिर्फ रचनात्मकता तक सीमित नहीं रहा।

जो बच्चे पहले स्कूल से कट रहे थे, अब रोज़ आने लगे। कक्षा का माहौल बदला, और पढ़ाई अब बच्चों के लिए मज़े की चीज़ बन गई। अमोल जी हर घर जाकर माता-पिता से बात करते, उन्हें बच्चों की कला दिखाते, और समझाते कि शिक्षा सिर्फ किताबों में नहीं — बच्चों के हाथों, सोच और अनुभवों में भी है। एक छात्रा के पिता रमेश पाटिल गर्व से कहते हैं, "पहले हमें लगता था कि सरकारी स्कूल में क्या होगा। अब जब हम अपनी बेटी की कला और उसका आत्मविश्वास देखते हैं, तो लगता है — अमोल जी ने सच में स्कूल को बदल दिया।"

इस यात्रा में उनका सच्चा साथी बना विनोबा ऐप — जहाँ बच्चों की रचनाएँ साझा हुईं, सराही गईं, और पूरी शिक्षा समुदाय से जुड़ीं।

सरकारी स्कूल के शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए, 'आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम' के तहत विनोबा ऐप को लगातार उन्नत किया जा रहा है, ताकि अमोल जी जैसे शिक्षकों का शानदार काम जारी रहे। इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, ओपन लिंक्स फाउंडेशन ने 'टीचिंग एट द राइट लेवल' के लिए एक AI आधारित समाधान विकसित किया है, जो दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए भी सहज और अत्यंत उपयोगी होगी।

अमोल जी मुस्कुराकर कहते हैं, "विनोबा एक सच्चा दोस्त है — जो बच्चों को मंच देता है, और हमें नया दृष्टिकोण।" आज मोहगांव स्कूल में बच्चे सिर्फ पढ़ते नहीं — रचते हैं, सीखते हैं और खुद को पहचानते हैं। और यही तो असली शिक्षा है — जहाँ हर बच्चा खुद बोल उठे: "मैं कुछ बना सकता हूँ।" ■

पढ़ाई की अटारी, सपनों की फुलवारी

अहिल्यानगर: अंतरवली बुद्रुक गाँव में एक घर है, जिसकी अटारी हर समय जीवंत रहती है। कभी बच्चों की खिलखिलाहट, कभी पन्नों की सरसराहट, कभी किताबों में डूबे चेहरे। यह अटारी दरअसल **शिक्षिका श्रीमती पूनम संतोष राऊत** का निजी पुस्तकालय है-जहाँ किताबें सिर्फ सजती नहीं, पढ़ी भी जाती हैं।

ज़िला परिषद स्कूल, अंतरवली बुद्रुक शिक्षिका पूनम राऊत कक्षा में बच्चों को पढ़ाई की अहमियत समझातीं और उनसे कहतीं, "किताब पढ़ना सबसे आसान और सबसे कारगर आदत है। इससे कल्पना शक्ति बढ़ती है, ज्ञान मिलता है, समझने-ग्रहण करने की ताक़त बढ़ती है, शब्द-संपदा मिलती है, बोलने-लिखने में आत्मविश्वास आता है और हर तरह की परीक्षा के लिए तैयारी होती है। बस एक यही गतिविधि मुझे लगी कि अगर मैं चाहती हूँ कि मेरे बच्चे संपूर्ण रूप से बढ़ें, किताबें पढ़ना बच्चों के लिए बेहद ज़रूरी और पोषक हैं।"

लेकिन सिर्फ समझाने से कहाँ आदतें बनती हैं। पूनम मैडम और उनके सामाजिक कार्यकर्ता पति संतोष राऊत ने ठान लिया कि बच्चों को किताबों के नज़दीक लाना ही होगा। तभी उनके घर की अटारी ने एक नया रूप लिया—दीवारों पर सजी अलमारियाँ, रंग-बिरंगे कवर, और गाँव के बच्चों के लिए एक खुला आमंत्रण।

अब नज़ारा ही कुछ और है—कोई बच्चा सीढ़ियों पर बैठा है, कोई फ़र्श पर लेटा है, कोई कोने में घुटनों पर किताब खोले हुए है। किताबें उनके हाथों में हैं, पर असल में वे खुद किताबों के पन्नों में उतर गए हैं। एक छात्रा मुस्कराते हुए कहती है, "पहले मैं किताब को सिर्फ पढ़ाई का बोझ मानती थी, अब मैडम की लाइब्रेरी में आते-आते किताब मेरी दोस्त बन गई है। अब तो दिनभर में कोई किताब न पढ़ूँ, तो अधूरापन लगता है।"

एक छात्र कहता है, "हम सब यही चाहते हैं कि हर दिन स्कूल के बाद भी लाइब्रेरी ज़रूर जाएँ। यहाँ कोई घंटी नहीं बजती, पर मन खुद पढ़ाई में रमा रहता है।"

बच्चों की किताबें पढ़ने की इस लगन से अभिभावक हैरान भी और प्रसन्न भी। एक पिता गर्व से कहते हैं, "पहले बेटा मोबाइल पर गेम खेलता रहता था, अब घर आते ही कहता है—पापा, मुझे लाइब्रेरी जाना है।"

एक माँ भावुक होकर कहती है, "बच्चे अब घर आते ही किताबें उठाकर बैठते हैं, मानो उनके लिए कोई नया संसार खुल गया हो।"

पुस्तकालय में एक अनोखा नियम है—जो भी किताब दान दे, उसे पहले ख़ुद पढ़े। हर किताब अपने साथ किसी पाठक का अनुभव लेकर आती है।

कहते हैं, हर सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री होती है। पर जब कोई पुरुष अपनी स्त्री के पीछे खड़ा होता है, तो वह स्त्री उड़ान भर लेती है। संतोष राऊत के साथ मिलकर पूनम राऊत ने यह साबित कर दिया कि पढ़ने की आदत ही बच्चों को ज़िंदगी की असली ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है। आज अंतरवली बु की यह अटारी सिर्फ किताबों का कमरा नहीं, बल्कि सपनों की फुलवारी है—जहाँ से हर बच्चा एक नई उड़ान भरने को तैयार है। ■

शिवनी में नवचेतना का धमाका

एक युवा शिक्षक की प्रेरणादायक यात्रा

शिवानी (नागपुर): साल 2020 में जब युवा शिक्षक श्री निलेश नन्नावरेने नागपुर जिले के रामटेक ब्लॉक स्थित शिवनी जिला परिषद स्कूल का कार्यभार संभाला, तो उन्हें एक अजीब-सा सन्नाटा महसूस हुआ। बच्चे ज़्यादातर खेतिहर या मज़दूर परिवारों से थे, जो शिक्षा को जीवन की ज़रूरत नहीं मानते थे, और जो अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते थे, उनका झुकाव भी तेजी से निजी स्कूलों की ओर हो रहा था। इस उदासीनता को तोड़ने और गाँव के इन 'नन्हे सितारों' को चमक देने के लिए निलेश जी ने ठान लिया कि उन्हें न सिर्फ़ पाठ्यक्रम, बल्कि गाँव की सदियों पुरानी सोच को भी बदलना होगा।

उन्होंने अपनी शुरुआत परंपराओं को तोड़ने से की। साल 2021 के रक्षाबंधन पर, देशभर में जब बेटियाँ भाइयों की कलाई पर राखी बाँध रही थीं, तब निलेश जी के नेतृत्व में शिवनी में यह त्योहार एक अलग ही अंदाज़ में मनाया गया। उन्होंने लड़कों से लड़कियों को राखी बाँधने के लिए कहा—यह संदेश देने के लिए कि सम्मान और सुरक्षा दोनों साझा जिम्मेदारी है। यह लिंग समानता का पहला ज़ोरदार पाठ था, जिसे बच्चों ने खुले दिल से अपनाया।

बच्चों की सुस्ती और झिझक को दूर करने के लिए उन्होंने 'जल्लोष' नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू किया। यह केवल मनोरंजन नहीं था; यह बच्चों की आज़ादी का मंच था। निलेश जी ने उन्हें एक ही निर्देश दिया: मंच पर आओ, झिझक की हर दीवार तोड़ दो, और बस कुछ भी कर के दिखाओ! गाओ, नाचो, कविता सुनाओ... बस अपनी अंदर की ऊर्जा को बाहर आने दो। इस उत्सव ने बच्चों में आत्मविश्वास का ऐसा बीज बोया, जिसका असर जल्द ही दिखने लगा। एक माँ खुशी से अपनी बेटी के अच्छे प्रदर्शन का ज़िक्र करते हुए बताती हैं, "हमारे बच्चों में अब आत्मविश्वास आ गया है। वार्षिक स्नेहसम्मेलन में मेरी बेटी ने जिस तरह स्टेज पर कविता सुनाई, वो देख कर मुझे लगा कि हमारा बच्चा भी किसी से कम नहीं है। निलेश जी ने हमारे बच्चों को सिर्फ़ सिखाया नहीं, उन्हें बोलने की हिम्मत दी है।"

साहस का अगला कदम था पिकनिक। शिक्षकों के लिए छोटे बच्चों को स्कूल से बाहर ले जाना हमेशा से एक नाज़ुक और चुनौतीपूर्ण काम रहा है, इसलिए ज़्यादातर शिक्षक इससे बचते थे। लेकिन निलेश जी जानते थे कि इन बच्चों के लिए दुनिया के दरवाज़े खोलना कितना ज़रूरी है। वह कहते हैं, “गाँव के कितने ही बच्चे बिना शहर देखे ही बड़े और बूढ़े हो जाते हैं। ऐसे में, उनके बच्चों को हमने नागपुर शहर का मेट्रो ट्रेन, भव्य स्वामी नारायण मंदिर, हवाई अड्डा दिखाया।”

इस साहसिक पहल से बच्चों में सीखने और जानने का ऐसा उत्साह जागा कि स्कूल उनका सबसे प्रिय स्थान बन गया। एक अभिभावक बताते हैं, "पहले बच्चा स्कूल जाने से कतराता था। उसे पता चला कि गाँव के बाहर भी एक इतनी बड़ी दुनिया है, जिसके लिए उसे पढ़ना ज़रूरी है।"

निलेश जी ने छात्राओं को स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवसपर झंडा फहराने का सम्मान देकर नेतृत्व की एक और मज़बूत नींव रखी। उनकी रचनात्मकता और अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप, बच्चों ने खुद भाषाओं में पढ़ना, गणित और विज्ञान की अवधारणाओं को समझना शुरू कर दिया। आज शिवनी के ZP स्कूल का माहौल इतना जीवंत और ऊर्जावान हो चुका है कि निजी स्कूलों के बच्चे भी टी.सी. लेकर वापस यहाँ आ रहे हैं—यह उनके नवाचार की सबसे बड़ी सफलता है।

निलेश नन्नावरेजी ने, इन छोटी-छोटी परंपराओं को तोड़कर, न केवल शिवनी के पूरे गाँव को इस मुहिम से जोड़ा है, बल्कि बच्चों को एक बेहद ज़रूरी जीवन-सबक भी सिखाया है। वह मानते हैं, "हालाँकि बच्चे इस बात से अनजान हैं, लेकिन उनके छोटे दिमाग़ अनजाने में यह सीख रहे हैं कि लीक से हटकर सोचने से अनगिनत संभावनाओं के द्वार खुल सकते हैं। इसी तरह, एक दिन वे सामाजिक बुराइयों को भी तोड़ने का साहस करेंगे।" ■

कविता

विज्ञान के फायदे

विज्ञान हमें सीखाता है,
नए-नए हुनर दिखाता है।

बिजली, इंटरनेट, मोबाइल,
हर घर में लाया खुशहाली।

दवाइयों से बढ़ी सेहत,
खेती में आई हरियाली।

आसान बना हर काम,
यह विज्ञान का पैगाम।

नवाचार की राह दिखाए,
विज्ञान हमें आगे बढ़ाए।

श्री रौशन रौफ शेख
एकलव्य आदिवासी आश्रमशाला, वायगाव गोंड, वर्धा

स्कूल की बैंक में खुला कौशल का खाता

इचोरी (वाशिम): स्कूल में अवकाश की घंटी बजी। चौथी के छोटू ने अपना बैग खोला, पेंसिल आधी रह गई थी। वह मुस्कुराया —"कोई बात नहीं!" — और सीधा स्कूल बैंक की मेज़ की ओर बढ़ गया।

वहाँ पाँचवी के दो बच्चे बैठे थे — बैंक के "कर्मचारी।" छोटू ने एक स्लिप भरी, पासबुक आगे बढ़ाई, पैसे निकाले और पास ही बने छोटे से स्टेशनरी स्टॉल से नई पेंसिल खरीद ली।

कुछ ही मिनटों में काम पूरा हो गया — न माँ-बाप से पैसे माँगने की ज़रूरत, न साप्ताहिक बाज़ार का इंतज़ार। पढ़ाई फिर से चल पड़ी।

यही है वाशिम जिले के मंगरूलपीर तालुका के छोटे-से गाँव इचोरी की जिला परिषद स्कूल की सबसे अनोखी पहल —'स्कूल बैंक', जहाँ बच्चे सिर्फ अक्षर नहीं, जीवन कौशल भी सीख रहे हैं।

इस बैंक की शुरुआत शिक्षकों ने एक सरल सोच से की —बच्चों को पैसों का मूल्य, जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता सिखाने के लिए।

यह बैंक पूरी तरह बच्चों द्वारा संचालित है। चौथी और पाँचवी के छात्र बारी-बारी से इसमें काम सँभालते हैं — खाते खोलते हैं, स्लिप भरते हैं, पासबुक अपडेट करते हैं। हर बच्चे का एक खाता है, जिसमें वह अपनी जेबख़र्च या खाऊ के पैसे जमा करता है और ज़रूरत पड़ने पर निकालता है।

धीरे-धीरे बच्चों ने सीखा कि पैसे बचाना, सही जगह खर्च करना और हर चीज़ का हिसाब रखना क्या होता है।

शिक्षकों ने आगे बढ़कर बैंक से जुड़ी एक और सुविधा जोड़ी — स्कूल के भीतर ही स्टेशनरी की छोटी दुकान।

मंगरूलपीर और वाशिम दोनों ही दूर हैं और गाँव में साप्ताहिक बाज़ार सिर्फ शुक्रवार को लगता है। पहले बच्चों को एक पेंसिल या पेन के लिए कई दिन इंतज़ार करना पड़ता था, अब वे अपने खाते से पैसे निकालकर ज़रूरी सामान तुरंत खरीद सकते हैं।

इस पहल ने बच्चों के भीतर अनुशासन और आत्मनिर्भरता का भाव जगा दिया है। गाँव के दुकानदार भी मुस्कुराकर कहते हैं, "अब बच्चे चॉकलेट लेने नहीं आते, पैसे बैंक में जमा करते हैं!"

हर साल जब पाँचवी कक्षा के बच्चे स्कूल छोड़ते हैं, तो उनके खाते बंद किए जाते हैं और उनकी बचत उन्हें लौटा दी जाती है — आगे की पढ़ाई के लिए एक छोटी सी पूँजी और बड़ी सीख के साथ। फिर वही बच्चे यह जिम्मेदारी अगली पीढ़ी को सौंप देते हैं — जैसे अनुभव की मशाल।

यह "स्कूल बैंक" भले ही एक छोटा-सा प्रयोग हो, पर असर बहुत बड़ा है। इचोरी की इस स्कूल बैंक में, बच्चों का कौशल का खाता खुल गया है — बचत, जिम्मेदारी, आत्मनिर्भरता और समय का मूल्य — यही इस बैंक की असली कमाई है।

ख्वाबों से सजी स्कूल की चौखट

"फूलों-फलों की होनी चाहिए फसल,
खुशियों का होना चाहिए उत्सव, भले ही गाँव में मंदिर न हो,
पर बच्चों को गढ़ने के लिए आदर्श विद्यालय होना ज़रूरी है।"

यही विश्वास लेकर चलते हैं बंडु शालिक खोब्रागड़े।

वही गाँव, वही गलियाँ, वही मिट्टी जहाँ से उन्होंने पढ़ाई की थी, आज उसी गाँव की चौखट पर वह शिक्षक बनकर लौटे। लौटते ही सामने था सच का आईना—जर्जर दीवारें, फीकी रंगाई, बेजान कमरों में पढ़ते बच्चे।

"स्कूल मेरी माँ जैसी है," खोब्रागड़े सर कहते हैं, "अगर ये ही कमजोर दिखेगी तो बच्चों में आत्मविश्वास कहाँ से आएगा?"

समस्या सिर्फ रंग-रोगन की नहीं थी, समस्या थी उम्मीद की। गाँववाले हाथ खड़े कर चुके थे, पंचायत पहले भी मना कर चुकी थी, और स्कूल के पास कोई निधि नहीं। सहयोग के दरवाज़े बार-बार खटखटाए गए पर सन्नाटा ही जवाब था।

उन्होंने अपने साथी शिक्षकों के साथ तय किया—"हम स्कूल को जीवंत बनाकर रहेंगे। दीवारें भी पढ़ाएंगी, कमरे भी सिखाएंगे, और स्कूल खुद बच्चों की दोस्त बन जाएगी।"

धीरे-धीरे संवाद और विश्वास का सिलसिला शुरू हुआ। सरपंच और ग्रामसेवक को वे छुट्टियों में घर जाकर समझाते, कभी स्कूल बुलाकर बच्चों की आँखों में चमक दिखाते। आखिरकार गाँव का मन पिघला। पंचायत ने ठान लिया कि इस बार बदलाव होगा।

दीवाली के उपहार की तरह स्कूल की दीवारों पर रंग चढ़ा, चित्र बने, और गाँव का सन्नाटा गूंजने लगा बच्चों की हँसी और किताबों की आवाज़ से। सहकर्मी शिक्षक गर्व से कहते हैं, "हम सबने मिलकर यह सपना साकार किया, पर असली हिम्मत खोब्रागड़े सर ने दिखाई। वे न होते तो यह संभव नहीं था।"

एक माँ की आँखों में चमक है, "पहले मेरा बेटा स्कूल जाने से कतराता था, अब रोज़ सुबह सबसे पहले वही तैयार होता है। कहता है—माँ, हमारी स्कूल बहुत सुंदर है।"

एक बच्ची खिलखिलाकर कहती है, "अब हमारी किताबें सिर्फ कॉपी में नहीं, दीवारों पर भी लिखी हैं। हम पढ़ते-पढ़ते खेलते हैं।"

एक और छात्र गर्व से कहता है, "जब बाहर से कोई अधिकारी आता है और हमारी स्कूल की तारीफ़ करता है, तो लगता है जैसे हमारी ही तारीफ़ हो रही हो।"

आज बंडु शालिक खोब्रागड़े और उनके साथी शिक्षकों की मेहनत से 'बोथली का प्राथमिक विद्यालय' सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि सपनों का घर बन गया है।

स्कूल अब चुप नहीं, सचमुच बोलती है—और उसकी हर दीवार बच्चों के भविष्य की गवाही देती है।

'Vinoba App ने मुझे हर अर्थ में आसमान दिया है'

तुरोरी (धाराशिव): कभी-कभी साधारण सी दिखाई देनेवाली चीज़ से बड़ी राहत मिलती है। तुरोरी के जिला परिषद स्कूल के शिक्षक श्री महेश कडगंचे के लिए Vinoba App ऐसी ही राहत बनकर आया।

महेश जी बताते हैं, "मैं हमेशा अपनी कक्षा की गतिविधियों, बच्चों की प्रस्तुतियों और स्कूल के कार्यक्रमों की फोटोज़ और वीडियोज़ बनाता था। लेकिन फोन की मेमोरी हमेशा फुल रहती थी, डेटा डिलीट हो जाता था या ट्रांसफर करने का समय ही नहीं मिलता था। इतने सालों की मेहनत रिकॉर्ड ही नहीं हो पाती थी।"

फिर आया Vinoba App — और जैसे उन्हें एक खुला आसमान मिल गया। अब वे अपनी सारी तस्वीरें और वीडियो सीधे ऐप पर अपलोड कर लेते हैं। न केवल सुरक्षित रहते हैं, बल्कि जब चाहें उन्हें देखकर अपने काम को फिर से सुधार और साझा भी कर सकते हैं।

Vinoba, जिसे Open Links Foundation (OLF) ने विकसित किया है, लगातार शिक्षकों के लिए नई तकनीकी सुविधाएँ ला रहा है। हाल ही में, OLF को Meta और The Nudge Institute से AI आधारित Teaching at the Right Level समाधान विकसित करने के लिए अनुदान मिला है। इसकी मदद से शिक्षक अपनी कक्षा के बच्चों की low, medium या high proficiency के अनुसार गतिविधियाँ और वर्कशीट्स बनवा सकेंगे... और यह सब वे अपनी स्थानीय भाषा में कर सकेंगे।

महेश जी मुस्कुराते हुए कहते हैं, "मैं 33 साल से मेहनत कर रहा था, लेकिन जब किसी को अपना काम दिखाना होता था, तो मेरे पास कुछ नहीं होता था। Vinoba App ने वो जगह दी जहाँ मैं अपना काम सहेज सका।

अब मेरे पास सैकड़ों वीडियो और फोटो हैं—और इन्हीं से मुझे पुरस्कार और पहचान मिली है। सच में, Vinoba App ने मुझे हर अर्थ में आसमान दिया है।" ■

शिक्षा संदेश

...और रेखा मिट गई

- संदेश संजय थोरवे

गुरुवार का दिन था। 'सारथी ऑटोकेअर' की मालकिन कांता हमेशा की तरह गैरेज में काम करते हुए रेडियो के 'अनुभव कथन' कार्यक्रम का इंतजार कर रही थी। उस दिन गाड़ियाँ कम थीं, तो उसका ध्यान रेडियो की तरफ ज़्यादा था। पास काम कर रहे रमेश ने कहा, "कल फॉर्च्यूनर की सर्विसिंग करते समय तेल (ऑइल) चेक करना भूल गया।"

यह सुनकर कांता तुरंत गंभीर हो गई और बोली, "रमेश, क्या मुझे हर बार तुम्हें याद दिलाना पड़ेगा?"

कांता का चिढ़ा हुआ स्वर सुनकर रमेश थोड़ा नाराज़ हुआ।

तभी, **RJ सोनू** की आवाज़ आई, "आज की कहानी का नाम है, दोस्ती।"

सावरगाँव में मोहन और सागर नाम के दो गहरे दोस्त रहते थे। वे बचपन से साथ खेलते, मस्ती करते और स्कूल जाते थे।

एक बार, स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल बनाने का काम चल रहा था। टीचर ने मोहन और सागर को 'सौर ऊर्जा प्रणाली' का मॉडल बनाने का प्रोजेक्ट दिया।

सागर मॉडल का एक ज़रूरी हिस्सा दूसरे हिस्से से जोड़ रहा था, तभी मोहन ने अचानक चिल्लाकर कहा, "सागर, काम पर ठीक से ध्यान दे! तुम्हें बस जल्दी खत्म करने की जल्दी रहती है।"

मोहन की यह बात सागर को बहुत बुरी लगी। उसने सोचा, 'यह मेरा दोस्त होकर मुझे ऐसे ताना क्यों मार रहा है? क्या मेरे प्रयास की कोई कीमत नहीं?'

उस घटना के बाद मोहन को महसूस हुआ कि उन दोनों में बातचीत कम होती जा रही थी।

चार दिन बाद, टीचर क्लास में आईं और बोलीं, "बच्चों, आज से हम 'फीडबैक' (प्रतिक्रिया) तरीका इस्तेमाल करेंगे। यह तरीका नीदरलैंड में ख़ास तौर पर उपयोग होता है। इससे हमें पता चलेगा कि हमें खुद में क्या सुधार करना है।"

इस गतिविधि में, हर बच्चे को दूसरे के काम के बारे में सिर्फ दो बातें बतानी थीं। काम में क्या अच्छा हुआ है? काम में कौन-सा छोटा-सा बदलाव करने पर काम और बेहतर हो सकता है?

इन बातों से मोहन को पहली बार अपनी गलती का एहसास हुआ। अगले दिन, मोहन सागर के पास गया और शांत दिल से बोला, "सागर, मैंने पहले जो कहा था, उसके लिए मुझे माफ़ कर दो! तुमने मॉडल बनाने की कोशिश अच्छी की। लेकिन अगली बार, कोई भी हिस्सा जोड़ने से पहले वह सही से बैठ रहा है या नहीं, यह एक बार ठीक से जाँच लेना। ताकि दोनों हिस्सों के बीच जगह न रहे।"

सरल और स्पष्ट फीडबैक से उनकी दोस्ती फिर से मज़बूत हो गई।

रेडियो पर यह कहानी सुनकर कांता को अपनी गलती समझ में आ गई। वह तुरंत रमेश से बोली, "रमेश, सुनो! तुम एक काम करो। गैरेज में आते ही गाड़ी की सर्विसिंग होने वाली सभी चीज़ों की एक चेक लिस्ट अपने सामने वाले बोर्ड पर लिख दो।

जब सर्विसिंग पूरी हो जाए, तब एक बार उस बोर्ड की तरफ देखना! यानी अपना फीडबैक हमें तुरंत मिल जाएगा!"

इस पर रमेश ने हँसकर सिर हिलाया। और उनके मन की रेखा मिट गई। ■

'हमें शिक्षा में उत्कृष्टता के नए रास्ते खोजने होंगे'

छठे 'शिक्षण उत्सव' का सफल आयोजन

चंद्रपुर: जिला प्रशासन, मास्टेक फाउंडेशन और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भव्य 'चंद्रपुर शिक्षण उत्सव' में शिक्षकों के जोश और उत्साह ने एक अविस्मरणीय माहौल बनाया।

OLF की पहल से महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में आयोजित हो रहे इन शिक्षण उत्सवों की यह छठी कड़ी थी, जो शिक्षा जगत में बदलाव का प्रतीक बन रही है। इस उत्सव में शिक्षकों ने विचारोत्तेजक गतिविधियों, मनोरंजक खेलों, जीवंत पैनल चर्चा और सम्मान समारोह में अभूतपूर्व उत्साह के साथ भागीदारी की। मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षाधिकारी श्रीमती अश्विनी केलकर- सोनावणे और भद्रावती खंड शिक्षा अधिकारी डॉ. प्रकाश महाकलकर की गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। OLF की महाराष्ट्र हेड चित्रा खन्ना और उनकी टीम उपस्थित थी।

अपने संबोधन में श्रीमती सोनावणे ने सभी शिक्षकों से शिक्षण और अधिगम में उत्कृष्टता प्राप्त करने के अभिनव तरीकों की खोज करने का आह्वान किया। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपने अनुभवों को मूर्त रूप दें

और चंद्रपुर के प्रत्येक खंड में कम से कम 10 स्कूलों को 'निपुण' का दर्जा दिलाने की दिशा में कार्य करें। कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रही 12 उत्कृष्ट शिक्षकों, 2 प्रधानाध्यापकों, 3 केंद्र प्रमुखों और एक खंड शिक्षा अधिकारी का भव्य सम्मान समारोह।

विनोबा शिक्षण उत्सव का उद्देश्य सिर्फ़ उपलब्धियों का जश्न मनाना नहीं है, बल्कि शिक्षकों, छात्रों और समुदायों को एक साथ लाकर सरकारी स्कूलों में हो रहे सकारात्मक बदलावों को सामने लाना है।

यह मंच उन शिक्षकों की रचनात्मक पहल और नए प्रयोगों को साझा करने का अवसर देता है, जिन्होंने पढ़ाई को बच्चों के लिए आनंदमय और सार्थक बनाया है। उत्सव में अनुभवों का आदान-प्रदान होता है, जिससे शिक्षक एक-दूसरे से प्रेरित होकर नई राहें खोजते हैं। ओपन लिंक्स फ़ाउंडेशन का मानना है कि ऐसे सामूहिक प्रयास ही शिक्षा को गुणवत्ता की ओर ले जाते हैं।

'स्पेलिंग बी, अंग्रेजी सीखने की सर्वोत्तम विधि'

यवतमाल: "स्पेलिंग बी (Spelling Bee) अंग्रेजी भाषा सीखने की सर्वोत्तम विधि है। यह प्रतियोगिता बच्चों को जड़ से—अर्थात सही वर्तनी (स्पेलिंग) के साथ-साथ सटीक और स्पष्ट उच्चारण—का कौशल आत्मसात करने में मदद करेगी। यह कौशल उनके पूरे जीवन में उपयोगी सिद्ध होगा," यह बात जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) श्री मंदार पत्कीने "स्पेलिंग बी प्रतियोगिता" के जिला स्तरीय समापन समारोह के दौरान मार्गदर्शन करते हुए कही।

इस अवसर पर, शिक्षाधिकारी (प्राथमिक) श्री प्रकाश मिश्रा, यवतमाळ जिला प्रशिक्षण संस्था (DIET) से डॉ. धम्मरत्न वायवाळ, उपशिक्षाधिकारी (प्राथमिक) डॉ. विद्या पोलेपेल्लीवार, उपशिक्षाधिकारी श्री राजू मडावी, वरिष्ठ विस्तार अधिकारी श्रीमती प्रणिता गाढ़वे, केंद्र प्रमुख शुभांगी वानखड़े, तथा ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) की स्टेट हेड चित्रा खन्ना उपस्थित थे।

श्री पत्की ने अपने संबोधन में आगे कहा कि भविष्य में इसे यवतमाळ जिले के सभी 16 विकसखंडों में लागू किया जाएगा।

यवतमाल जिला परिषद और OLF के संयुक्त तत्वावधान में यह प्रतियोगिता

विकासखंड स्तर से चयनित कक्षा 4 से 8 के छात्रों के लिए आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता छात्रों में भाषा की समझ, आत्मविश्वास, तर्कशक्ति और प्रस्तुति कौशल विकसित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण साबित हुई।

श्री प्रकाश मिश्रा ने कहा कि 'स्पेलिंग' बनाना भले ही एक साधारण बात लगती हो, लेकिन यह हमारे रोजमर्रा के अध्ययन और आगे के जीवन में भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है। इसलिए 'स्पेलिंग बी' प्रतियोगिता कई अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं से निश्चित रूप से अलग है।

डॉ. वायवाळ ने इस प्रतियोगिता को ग्रामीण छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण पहल माना, क्योंकि अंग्रेजी भाषा हमेशा से ही बच्चों को एक कठिन विषय लगती रही है। इस प्रतियोगिता में श्रीमती अमृता भीष्मा, श्रीमती सोनाली धोटे और श्री वैभव जगताप निर्णायक मंडल के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रास्ताविक रघुनाथ वानखड़ेने रखा, जबकि संचालन विजय वावगेने किया। चित्रा खन्नाने उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया।

प्रतियोगिता के कक्षा 4-5 समूह में, जि. प. स्कूल, हारू (ता: दारव्हा) की आचल भरत वानखड़ेने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि कक्षा 6-8 समूह में, जि. प. स्कूल, चिली जे (ता: उमरखेड) की वेदिका विलास राठोडने विजेता का खिताब जीता। विजेताओं को गणमान्य व्यक्तियों के हाथों प्रमाण पत्र और पुरस्कार दिए गए।

'कविता पाठ प्रतियोगिताएं बच्चों में साहित्य के प्रति प्रेम पैदा करेंगे'

बेगूसराय (बिहार) : "राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जिला-स्तरीय कविता पाठ प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम बच्चों में कम उम्र से ही साहित्य और कविता के प्रति प्रेम पैदा करेंगे, जिससे वे अपनी महान काव्य संस्कृति से जुड़े रहेंगे।"

यह प्रेरणादायक टिप्पणी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL) के कार्यकारी निदेशक एवं बरौनी रिफाइनरी हेड श्री सत्य प्रकाश की थी, जो जिला शिक्षा विभाग और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कविता प्रतियोगिता के भव्य समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की 117वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस अभूतपूर्व प्रतियोगिता में 900 से अधिक छात्रों ने विनोबा ऐप पर अपने कविता पाठ के वीडियो अपलोड किए थे, जिनमें से 52 प्रतिभाशाली छात्रों को इस भव्य समापन के लिए चुना गया था।

इस अवसर पर अतिरिक्त कलेक्टर, बेगूसराय अजय कुमार (IAS), जिला शिक्षा पदाधिकारी श्री मनोज कुमार, OLF के वरिष्ठ ट्रस्टी श्री राजीव कुमार, एस के महिला महाविद्यालय, बेगूसराय की सेवानिवृत्त प्राचार्या डॉ. सपना चौधरी और सभी BEO सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।इस आयोजन में गैर लाभकारी संस्था आई-सक्षम (I-Saksham) का भी सक्रिय सहयोग रहा।

कूट प्रश्न 16 एक तिली हटाकर समीकरण संतुलित करें।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन ऑफिस नं. 403, पिकासो केदारी लैंडमार्क, केदारी नगर, वानवडी, पुणे – 411 040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापिका: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**